Dainik Bhaskar Date: 04.12.2018

सिटी प्लस

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय कांफ्रेंस का आयोजन

इंदौर| श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में साइको-लिंगुस्टिक एसोसिएशन (पीएलएआई) के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय कांफ्रेंस का उद्घाटन किया गया। कांफ्रेंस का विषय " फ्यूचर ऑफ़ वर्कः इवोल्विंग रीअलिटीस इन सोशल साइंसेज, ह्यूमनिटीस, फ़ाईन आर्ट एंड मॉस मीडिया" है। मुख्य अतिथि डॉ रामराजेश मिश्रा, पूर्व कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, और मुख्य वक्ता ए. जाहिथा बेगम प्रोफेसर और हेड, शिक्षा विभाग, गांधीग्राम रूरल विश्वविद्यालय, डिंडीगुल, तमिलनाडु ने कांफ्रेंस का उद्घाटन किया। डॉ. उपिंदर धर, अध्यक्ष पीएलएआई और कुलपति, श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय, इंदौर, डॉ महेश भार्गव, संरक्षक, पीएलएआई, डॉ राजश्री, संयुक्त सचिव, पीएलएआई और डॉ संतोष धर, कांफ्रेंस कन्वेनर और डीन एफडीएसआर, श्री वैष्णव विद्यापीठ विवि भी मौजूद थे।

पत्रिका PLUS

square . 15 | screenplay . 16 | इंदौर, मंगलवार, 04.12.2018 | PATRIKA.COM/E

वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में नेशनल कॉन्फ्रेंस में कीनोट स्पीकर प्रो. जाहिथा ने कहा-

युवा सुनने में नहीं, प्रयोगों में करते हैं विश्वास

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ श्री वैष्णव विद्यापीठ यूनिवर्सिटी में साइको-लिंगुस्टिक एसोसिएशन (पीएलएआई) के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन किया गया। इसका विषय 'फ्यूचर ऑफ वर्क : इवोल्विंग रीअलिटीज इन सोशल साइंसेज, ह्यूमनिटीस, फाइन आर्ट एंड मॉस मीडिया' है। मुख्य अतिथि विक्रम विवि के पूर्व कुलपति डॉ. राम राजेश मिश्रा, और मुख्य वक्ता डिंडीगुल (तमिलनाडु) की गांधीग्राम रूरल यूनिवर्सिटी में शिक्षा विभाग की हैड प्रोफेसर ए. जाहिथा बेगम ने उद्घाटन किया।

कीनोट स्पीकर प्रोफेसर ए. जहिथा बेगम ने कहा, सूचना संचार प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, नैनो प्रौद्योगिकी और संज्ञानात्मक विज्ञान ज्ञान कौशल के चार स्तम्भ हैं। ज्ञान शक्ति ने शारीरिक शक्ति का स्थान ले लिया है। आत्म सशक्तिकरण के लिए प्रौद्योगिकी की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, आजकल युवा सुनना नहीं चाहते अपितु वे प्रयोग में विश्वास रखते हैं।

खतरे में मनोविज्ञान : मुख्य अतिथि डॉ. मिश्रा ने कहा, मनोविज्ञान खतरे में है और इसका मूल स्वरूप खो गया है। मनोविज्ञान की बहु अनुशासनात्मक प्रकृति की वजह से शोधकर्ताओं और छात्रों की संख्या इस विषय में दिन-प्रतिदिन घट रही है। उन्होंने रामायण, महाभारत और वेदों के उदाहरणों के साथ अपने व्याख्यान का विस्तार किया। अध्यक्ष पीएलएआई और कुलपति श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय डॉ. उपिंदर धर, संरक्षक डॉ. महेश भार्गव, संयुक्त सचिव डॉ. राजश्री, कॉन्फ्रेंस कन्वेनर डॉ. संतोष धर आदि मौजूद थे।

वैष्णव विद्यापीठ विवि में कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते डॉ. राम राजेश मिश्रा।

बदलाव लाने का समय : डॉ. भार्गव

इस मौके पर डॉ. भार्गव ने कहा, दुनिया में लोगों का मनोविज्ञान के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण है, लेकिन यह बदलाव लाने का एक समय है। उन्होंने कहा, भाषा पर अच्छा अधिकार होना मनोविज्ञान को बेहतर बनाने में मदद करता है। वहीं डॉ. उपिंदर धर ने कहा, औद्योगिक क्रांति ने कार्य की प्रकृति को बदल दिया है, जिसके परिणामस्वरूप व्यवहार में बदलाव आया है। औद्योगिक क्रांत के कारण आदमी की महत्ता खो गई है। औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप मैन्युफैक्चरिंग नौकरियों में कमी आई है, लेकिन अच्छी नौकरी पाने के लिए नए कौशल सीखना आवश्यक है। नौकरी की प्रकृति में बदलाव के साथ हमें नए कौशल की आवश्यकता होगी और हमारी शिक्षा प्रणाली में हमें एक कौशलयुक्त वर्कफोर्स बनाने की जरूरत है।

डॉ राजश्री, संयुक्त सचिव पीएलएआई ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। पीएलएआई ने अपने विद्वानों और शिक्षाविदों को उनके संबंधित क्षेत्रों में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए मेमोरियल अवॉर्ड और सम्मान वितरित किए। उद्घाटन सत्र कन्वेनर डॉ. संतोष धर के धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हुआ।

पहले प्लेनरी सत्र में चेयर पर्सन व हेड, ड्राइंग एंड पेंटिंग डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट माधव आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, उज्जैन डॉ. अल्पना उपाध्याय ने 'कम्युनिटी मॉस सिंड्रोम' पर व्याख्यान दिया। इस सत्र के वक्ता प्रोफेसर और हेड साइकोलॉजी विभाग, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय ग्रेटर नोएडा डॉ. आनंद पी सिंह ने 'बायो फीडबैक : ए माइंड बॉडी मेडिसिन' पर चर्चा की। प्रोफेसर, एसवीएसएम डॉ टी. के. मंडल ने 'टेक्नोलॉजी रोल इन फ्यूचर ऑफ वर्क' पर प्रकाश डाला।

पहले दिन के अंतिम सत्र में पेपर प्रस्तुतियों का आयोजन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. आनंद पी. सिंह ने की और मॉडरेटर डॉ. शिल्पा फड़नीस थीं।

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

दैनिक भास्कर

कुल पृष्ठ 16+4+8=28, मूल्य ₹ 6.00 (माधुरिमा आज) | वर्ष 35, अंक 335, महानगर

इंदौर, बुधवार 05 दिसंबर, 2018 मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-13, 2075

ये नियोलॉजिज्म का दौर है, हर दिन नए विचार और फ्रैनिमी, मॉबिंग, फबिंग जैसे कई शब्द शामिल हो रहे डिक्शनरी में

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में चल रही नेशनल कांफ्रेंस में शामिल हुए स्पीकर्स

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

आज का दौर नियोलॉजिज्म का दौर है यानी हर दिन नए विचार आ रहे हैं। इनका प्रभाव इलेक्ट्रॉनिक, प्रिंट और सोशल मीडिया के साथ इंटरनेट पर भी देखा जा रहा है। आज यदि कोई व्यक्ति न आपका दोस्त है न दुश्मन तो उसे फ्रेनिमी कहा जाता है। आप किसी से बात करने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन वो व्यक्ति मोबाइल में बिज़ी होने के कारण आपको इग्नोर कर रहा है तो इसके लिए फबिंग टर्म इस्तेमाल किया जाता है। कोई व्यक्ति यदि अकेला है और चार-पांच लोगों का ग्रुप उसका मज़ाक बनाता है तो ये मॉबिंग कहला रहा है। अख़बार में हर दिन 20 से 25 ऐसे नए शब्द मिल जाएंगे जो कल के अख़बार में नहीं थे।

डीएवीवी के बोर्ड ऑफ स्टडीज़ इन इंग्लिश के चेयरमैन रह चुके प्रोफेसर डॉ. अशोक सचदेवा ने श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में चल रही कॉन्फ्रेंस में सम्बोधित कर रहे थे। वे लिंग्विस्टिक, नियोलॉजिज्म और क्रिएटिव एक्सप्रेशंस इन मॉर्डन

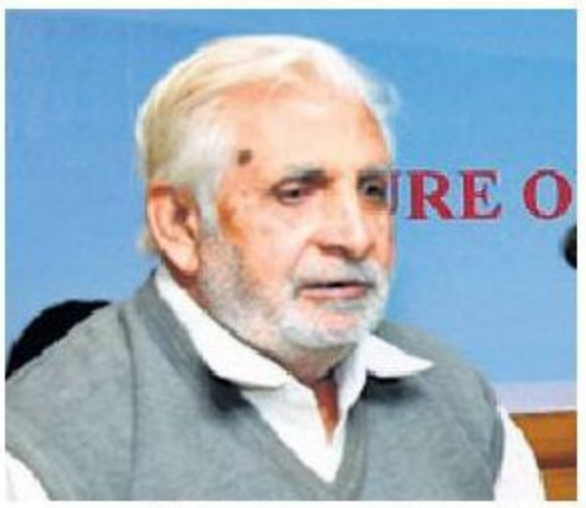

सोसायटी विषय पर बोल रहे थे। 5 दिसंबर तक चलने वाली इस कॉन्फ्रेंस की थीम फ्यूचर ऑफ वर्क : इवॉल्विंग रिएलिटीज़ इन सोशल साइंसेस, ह्यूमेनिटीज़, फाइन आर्ट एंड मास मीडिया है। दूसरे दिन 6 वक्ताओं ने अलग-अलग विषय पर अपनी बात रखी।

खुश रहना सिखाना होगा बच्चों को, वो उलझ गए हैं सतही चीज़ों में

रिलेशनशिप पर बात करते हुए डॉ. सचदेवा ने कहा- 'आज की सबसे मुख्य समस्याओं में एक रिलेशनशिप कॉन्फ्लिक्ट्स हैं। कई देश हैप्पीनेस इंडेक्स में टॉप पर हैं। एमपी में भी आनंद मंत्रालय शुरू हुआ है। रिलेशनशिप जैसी कई सामाजिक समस्याओं को दूर करने के लिए हैप्पीनेस को फ्यूचर स्टडी में शामिल करना होगा। हमें सोचना होगा कि सायकोलॉजिकल, बायोलॉजिकल और रिलेशनशिप डायनेमिक्स में इसे कैसे शामिल कर सकते हैं। डॉ. पी.एल. किरकिरे ने फ्यूचर स्टडीज़ के तहत आने वाले 100 या 200 साल बाद की घटनाओं को आज प्रेडिक्ट करने के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि उस समय आने वाली समस्याओं या इवेंट्स को हम आज सोच सकेंगे तो उन्हें दूर करने में आसानी होगी। वॉटर मैनेजमेंट और सोशल इंजीनियरिंग जैसे मसलों पर हमें आज ही सोचना होगा। कॉन्फ्रेंस में डॉ. अखिलेश कुमार सिंह, डॉ. सरोज कोठारी ने भी संबोधित किया।

दैनिक भास्कर

Date: 06.12.2018

सिटी एंकर

वैष्णव यूनिवर्सिटी में हुई नेशनल कॉन्फ्रेंस के आखिरी दिन डॉ. उषा जैन ने सम्बोधित किया

इलेक्शन में ड्यूटी लगी तो वॉट्सएप ग्रुप पर ऑडियो भेज पढ़ाया तकनीक का इस्तेमाल बच्चे कर रहे हैं तो टीचर्स क्यों नहीं करते

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

यूनिवर्सिटी ऑफ पेंसिलवेनिया में जगह-जगह शेक्सपीयर के वन लाइनर्स लिखे हुए हैं... साथ में कहीं कैलिग्राफी कर दी है तो कहीं कुछ पेंट कर दिया है। लिटरेचर और फाइन आर्ट्स की क्लास वहां चार दीवारों में नहीं लगती। प्रकृति के बीच टीचर्स, स्टूडेंट्स और साहित्य होता है। और ये एक नहीं, ऐसे कई वाकए हैं जिनमें स्टूडेंट्स को खुश, एंगेज्ड और मोटिवेटेड रखने के लिए देश-विदेश के इंस्टिट्यूशंस टीचिंग में इनोवेशंस कर रहे हैं। यहीं हम मात खा रहे हैं। पढ़ाने के हमारे तरीके इतने नीरस हो चले हैं कि स्टूडेंट्स सब्जेक्ट से जुड़ ही नहीं पाते। यही वजह है कि कुछ विषयों में बच्चे रुचि ही नहीं लेते। ह्यूमेनिटीज जैसा सब्जेक्ट जिसमें क्रिएटिविटी के साथ पढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं वो भी बोरिंग हो जाता है चार दीवारी में। इसकी शुरुआत हम टीचर्स इंटरनेट और सोशल

मीडिया से कर सकते हैं। जैसे बच्चे पूरे वक्त सोशल मीडिया पर एक्टिव हैं तो आप एक वॉट्सएप ग्रुप ही बना लीजिए। उसमें कभी-कभी कोई रेलेवेंट टॉपिक डाल दीजिए। इससे स्टूडेंट्स के विचार स्पंदित होंगे जिसे हम थॉट स्टिमुलेशन कहते हैं। कुछ ऐसा करें टीचर्स कि बच्चे उस डिस्कशन में इंट्रेस्ट लें। क्यों नहीं किसी दिन आप स्काइप पर ग्रुप चैट कर सकते?' हैंगआउट पर क्यों नहीं कोई डिस्कशन कर सकते। इस तरह बच्चों का इंट्रेस्ट डेवलप होगा।

गवर्नमेंट आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज में डिपार्टमेंट ऑफ इंग्लिश एसएबीवी की हेड डॉ. उषा जैन ने यह कहा। श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में हुई तीन दिनी नेशनल कॉन्फ्रेंस का बुधवार को आखिरी दिन था। एसवीआईएस के डॉ. के एन गुरुप्रसाद ने फ्यूचर एंड साइंस पर बात की।

डॉ. उषा ने अपने वक्तव्य में कहा - यंग जनरेशन कॅरियर ने नए एवेन्यू, नई संभावनाएं तलाश रही है लेकिन हमारा कन्वेंशनल मोड ऑफ टीचिंग उन्हें अट्रैक्ट नहीं कर पा रहा है। कॅरिकुलम में भी कई कमियां हैं। इनका काफी हिस्सा आज से रेलेवेंट नहीं है। इस कमी को आप क्रिएटिव एक्टिविटीज और थॉटफुलनेस से बैलेंस कर सकते हैं। जीएसीसी में हमने शुरू किया है सोशल मीडिया का इस्तेमाल। हम कुछ ऑडियो बच्चों को पास करते हैं। इस बार इलेक्शंस में जब हम टीचर्स ड्यूटी लगी हुई थी तो हमने वॉट्सएप ग्रुप में ऑडियो भेजकर पढ़ाया।

नॉवेल की नई बिगनिंग या नया क्लाइमेक्स लिखवाइए उनसे

ह्यूमेनिटीज की तरफ बच्चों की रुचि बढ़ी थी लेकिन पढ़ाने के नीरस तरीकों की वजह से बच्चे दूर होने लगे हैं। आट्स और फाइन आर्ट्स की तरफ भी एक झुकाव है। कई नई अपार्च्युनिटीज हैं। बच्चे एंगेज्ड और मोटिवेटेड रहें इसके लिए क्यों नहीं लिटरेचर में टीचर स्टूडेंट्स से किसी नॉवेल की नई बिगनिंग या नया क्लाइमेस लिखवाते हैं। इससे वो सोचेंगे। लिखेंगे। खुद को जानेंगे। अगर कोई वाकई अच्छा लिखता है तो उसे अपनी जिंदगी की सही राह मिलेगी। कॉलेज ही तो वो जगह है जहां बच्चे खुद को एक्सप्लोर कर सकते हैं।

दैनिक भास्कर

Date: 06.12.2018

तकलीफ होती है बच्चों के सुसाइड की खबरें सुन, वो खेलें, स्पोर्ट्स उन्हें मेंटली स्ट्रॉन्ग बनाएगा

जिलेट और दैनिक भास्कर के कैम्पेन सफलता अपनी मुट्ठी के फाइनल में शामिल हुए प्रोफेशन बॉक्सर विजेंदर सिंह

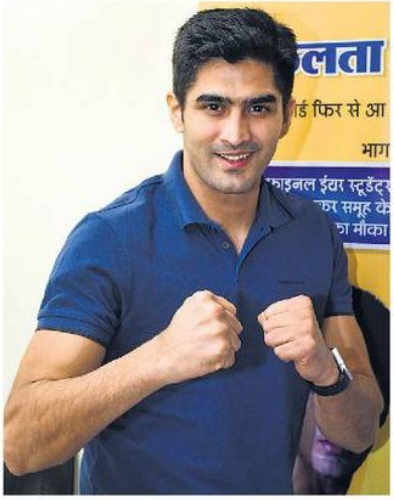

डॉ. उपिंदर धर ने विनर्स को फेलिसिटेट किया

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

किसी भी स्पोर्ट के लिए आपको फिजिकली फिट होना पड़ता है जिसके लिए खिलाड़ी रात दिन मेहनत करते हैं। लेकिन चुस्त शरीर के लिए आपकी ये तैयारी आपको मेंटली फिट भी करते जाती है। फोकस जो एक खिलाड़ी का है, शायद ही किसी का होगा। 15 सेकंड के लिए 15 साल तैयारी करता है प्लेयर। उसे पता है कि एक चूक उसे कहां पहुंचा देगी। तब उसका चित्त देह मन सब एक लय में रहेंगे। यही तो मेडिटेशन है। फोकस है। आप खुद को फिट रखो, स्पोर्ट्स में आओ। आपको शारीरिक मजबूती के साथ मेंटल स्ट्रेंथ मिलेगी। मुझे बहुत तकलीफ होती है जब बच्चे एग्जाम्स में अच्छा परफॉर्म नहीं कर पाने या रिजल्ट बिगड़ने के कारण सुसाइड कर लेते हैं। अभी कुछ ही समय में बच्चों के एग्जाम्स फिर आने वाले हैं। सभी स्टूडेंट्स से मैं कहना चाहता हूं कि स्पोर्ट कोई हॉबी नहीं है। ये जरूरी है। रोज किसी स्पोर्ट को टाइम जरूर दें इससे आपको लाइफ के बड़े से बड़े प्रेशर हैंडल करने की स्ट्रेंथ मिलेगी।

हर दिन आठ घंटे की ट्रेनिंग

प्रोफेशनल बॉक्सिंग में मैंने 10 फाइट की हैं और अब तक एक भी नहीं हारा हूं। ये सिर्फ हार्डवर्क के कारण ही हो सकता है। हर फाइट से पहले मेरा ट्रेनिंग सेशन रहता है। इस दौरान फिटनेस रेजीम एक्सटेंसिव रहता है सुबह ब्रेकफस्ट के बाद शुरू होने वाला वर्कआउट शाम 4 बजे तक चलता है। मेरे कोच ही तय करते हैं कि वर्कआउट में मुझे क्या करना है। रेगुलर जिमिंग के अलावा रनिंग, स्प्रिंट रन और स्टेप्स भी करना होते हैं। मैं कुछ देर मेडिटेशन भी करता हूं।

प्रोफेशनल बॉक्सिंग का वर्ल्ड चैम्पियन देना है इंडिया को

देश के लिए खेलने के पीछे मेडल और रिकग्निशन, बड़ा मोटिवेशन होता है लेकिन प्रोफेशनल बॉक्सिंग अलग है। हमारे देश ने अभी तक प्रोफेशनल बॉक्सिंग में वर्ल्ड चैम्पियन नहीं दिया है। मेरी ख्वाहिश है कि मैं देश के लिए वर्ल्ड चैम्पियशिप का तमगा लेकर आऊं। नए साल से मैं अमेरिका में अपनी प्रोफेशनल बॉक्सिंग शुरू करने जा रहा हूं।

38 हज़ार को किया ग्रूम

कैम्पेन के दौरान मप्र छग के 300 कॉलेजेस में स्टूडेंट्स के लिए ग्रूमिंग सेशंस कराए गए। तीन महीने चली इस एक्टिविटी में तकरीबन 38 हज़ार स्टूडेंट्स को पर्सनालिटी ग्रूमिंग ट्रेनिंग दी गई। 300 स्टूडेंट्स को सेमीफाइनल राउंड के लिए सिलेक्ट किया गया। फाइनल में कुल 40 स्टूडेंट्स सिलेक्ट हुए। बुधवार को हुए फाइनल राउंड में विजेंद्र सिंह ने विजेताओं को ट्रॉफी और सर्टिफिकेट दिए। दो विजेताओं को दैनिक भास्कर में जॉब और 11 स्टूडेंट्स को इंटर्नशिप का मौका मिलेगा। इवेंट के दौरान वैष्णव यूनिवर्सिटी के वीसी डॉ. उपिंदर धर, जिलेट के ब्रैंड मैनेजर करन कौल और दैनिक भास्कर के कॉर्पोरेट सेल्स के वाइस प्रेसीडेंट संजय मनी, एमपीसीजी एचआर हेड नितिका राणा व अन्य मौजूद थे।

कैम्पेन के विजेता रहे त्रिकाल देव यादव और रिया मंडल। अंश मिश्रा, रितु वर्मा, राहुल पेकरा, लोकेश देहारी, जोनू बंचकार, डागेश्वर साहू, पवन राठौर, राजीव चौहान, सूर्यकांत चंद्राकर, आशुतोष त्रिनिवाल और सौरभ दास को इंटर्नशिप का मौका मिला।

टोक्यो ओलिम्पिक में मौका मिला तो मैं भी भारत के लिए खेलूंगा

37 की उम्र में वर्ल्ड चैम्पियनशिप में गोल्ड जीतकर मैरीकॉम ने वो किया है वो मिसाल है। टोक्यो में भारत की ओर से खेलने का मौका मिला तो मैं भी मेडल जीतूंगा। अपने देश के लिए खेलूंगा। मेवेदर या पेकयाओ से लड़ने की बात पर विजेंदर बोले - ये हैवीवेट कैटेगरी के बॉक्सर है। आमिर भी मुझसे 10 किलो ज्यादा वजन में लड़ते हैं जबकि मैं 68 केजी में लड़ता हूं। जहां तक सवाल बड़े बॉक्सर्स से लड़ने का है तो मैं फ्लॉयड के साथ प्रैक्टिस कर चुका हूं। मौका आया तो मैं इन दिग्गजों के साथ एग्जीबिशन फाइट कर सकता हूं।

विजेंद्र की डाइट

ब्रेकफास्ट : विजेंद्र प्रोटीन इनटेक पर ज्यादा ध्यान देते हैं। एग व्हाइट के साथ कार्ब्स के लिए ब्रेड लेते हैं। ऑमलेट में ब्रोकली पसंद करते हैं। हेल्दी कार्ब्स के लिए ओट्स भी लेते हैं।

लंच : चिकन ब्रेस्ट या फिश विद ब्राउन राइस। व्हाइट राइस बिलकुल नहीं। ब्रोकली और स्वीट पोटेटो।

डिनर : बहुत हल्का और7 बजे से पहले डिनर फिनिश कर लेते हैं। इसमें वे हाफ बॉइल्ड वेजिटेबल्स लेते हैं।

The Times of India Date: 06.12.2018

Three-day Conference On Evolving Realities In Social Sciences, Fine Arts And Mass Media

A three-day national conference was organised at Shri Vaishnav Vidhyapeeth Vishwavidhyalaya recently. The theme of the conference was "Future of Work: Evolving Realities in Social Sciences, Humanities, Fine Art and Mass Media". On the occasion, chief guest, Vikram University's former vice-chancellor Dr Ramrajesh Mishra, connected all the eras of Indian mythology with social sciences, psychology, humanities, mass media and fine arts. He said that psychology was in trouble and had lost its identity. He elaborated his lecture with the examples from Ramayana, Mahabharata & Vedas.

पत्रिका

इंदौर, गुरुवार, 06.12.2018

वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय कॉन्फ्रेंस का समापन

स्टूडेंट्स को क्लास में लाना है तो बदलना होंगे टीचिंग के तरीके

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ साइको लिंग्विस्टिक एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ओर से वैष्णव विद्यापीठ में आयोजित तीन दिवसीय नेशनल कॉन्फ्रेंस का बुधवार को समापन हो गया। तीसरे दिन के वक्ता थे जीएसीसी की अंग्रेजी विभाग की हैड डॉ उषा जैन, और निदेशक एसवीआईएस डॉ. केएन गुरुप्रसाद, अध्यक्षता प्रोफेसर और एनआईटीटीआर हैड भोपाल डॉ. प्रभाकर सिंह ने की। सत्र की अध्यक्षता डॉ प्रभाकर सिंह, प्रोफेसर और हैड एनआईटीटीआर भोपाल ने की। वक्ताओं का कहना था कि क्लासरूम टीचिंग के तरीके बदलने होंगे।

डॉ. उषा जैन ने कहा कि ह्यूमेनिटीज के विषयों में क्लास रूम्स में स्टूडेंट्स की घटती संख्या चिंता का विषय है पर इस का हल निकाला जा सकता है। अब क्लासरूम टीचिंग का पारंपरिक तरीका बदलना होगा, जिसमें शिक्षक अपना लेक्चर देकर चला जाता है और स्टूडेंट्स ने कितना सुना या समझा इसकी कोई चिंता नहीं होती। क्लासरूम टीचिंग में अब एकतरफा कम्युनिकेशन के बजाय दो तरफा कम्युनिकेशन होना चाहिए। स्टूडेंट्स को अलग-अलग एक्टिविटीज में इन्वॉल्व करना होगा। उन्होंने अमरीका की यूनिवर्सिटीज और कॉलेजेज में जाकर देखा है कि वहां साहित्य जैसे विषयों में स्टूडेंट्स को इन्वॉल्व करने के लिए नई टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जा रहा है। स्टूडेंट्स को वाट्सऐप ग्रुप से, वेबसाइट्स से जोड़ा जाता है। ज्यादा से ज्यादा ग्रुप डिस्कशन कराए जाते हैं।

डॉ केएन गुरुप्रसाद ने भविष्य के कार्यों में विज्ञान की प्रासंगिकता के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि समाज और उसके विकास के लिए विज्ञान कैसे मायने रखता है। उन्होंने कहा कि विज्ञान में मूल सोच और प्रयोग महत्त्वपूर्ण है। अध्यक्षता कर रहे डॉ. प्रभाकर सिंह ने कहा कि कम्युनिकेशन से समाज में वास्तविकता का निर्माण होता है। परिवार, समाज या किसी संस्थान में अगर हम बेहतर माहौल चाहते हैं तो कम्युनिकेशन को बेहतर बनाना होगा। अच्छे कम्युनिकेशन से अच्छे मूल्यों का निर्माण होता है।

कॉन्फ्रेंस के समापन पर वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति और साइको लिंग्विस्टिक एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ उपिंदर धर ने कहा, इस प्रकार के सम्मेलन में शिक्षण समुदाय और शोधकर्ता बौद्धिक चर्चा के लिए एक मंच पर आते हैं।

औद्योगिक क्रांति के कारण कई बदलाव हुए हैं, जिन्होंने समाज और मानव व्यवहार को बेहतर बनाने के लिए योगदान दिया है। सम्मेलन की संयोजिका डॉ. रूपा शिंदे, डॉ. अनुराग जोशी भी मौजूद थे।